योशिको और विदेशी

लेखन व चित्रः मीमी ओटी लिटिल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

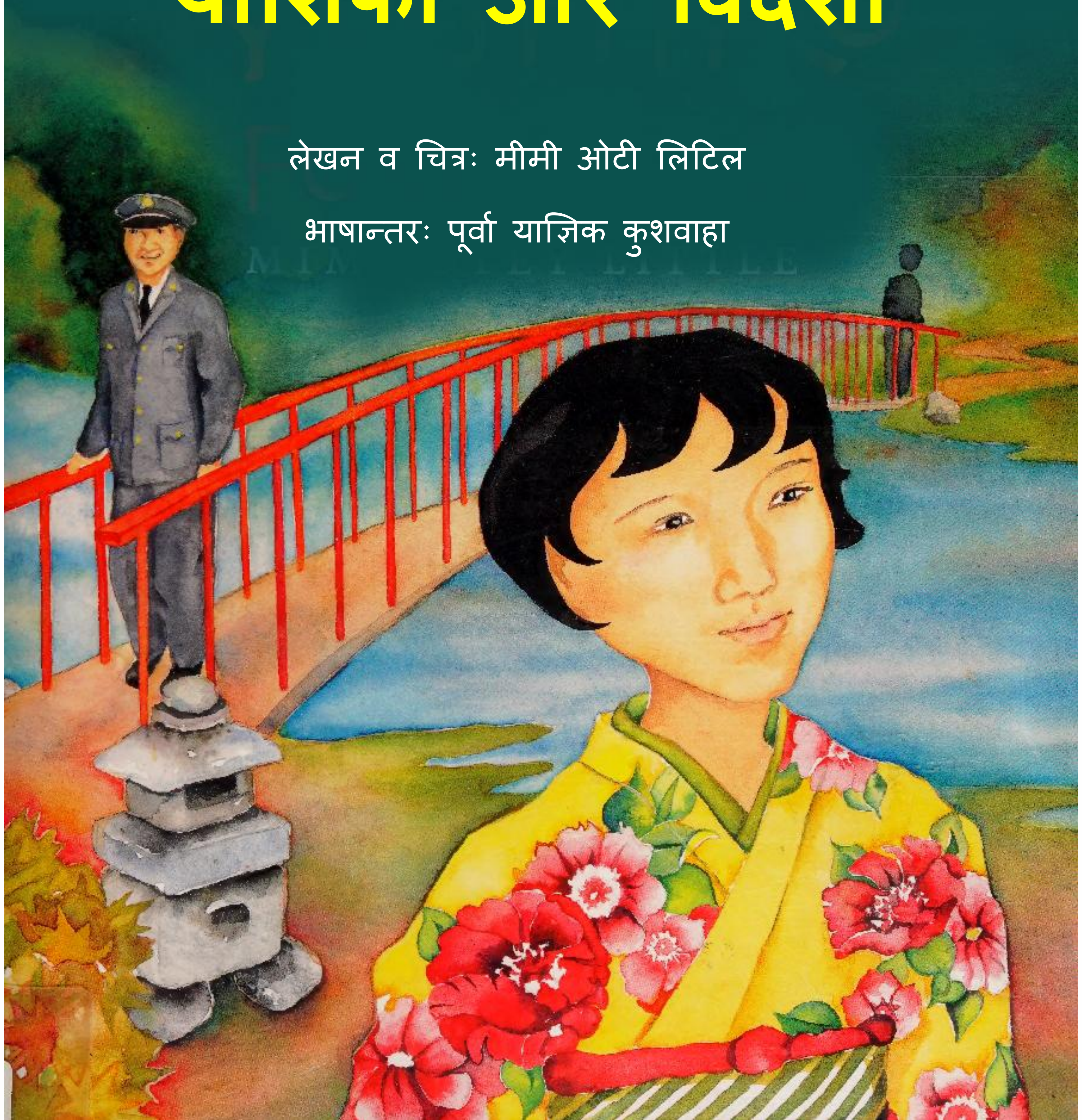

जापान में रिवाज़ यह था कि अच्छी यानी संस्कारी लड़कियाँ अजनबियों से बात नहीं करती थीं, खास तौर से विदेशियों से। पर नियम के अपवाद होते ही हैं। अमरीकी वायु सेना का एक नौजवान अफ़सर टोक्यो जाने वाली एक भीड़भाड़ वाली ट्रेन में खो चुका था और मदद नहीं मांग पा रहा था। योशिको का दिल पिघला, कुछ इस तरह कि उसकी ज़िन्दगी ही हमेशा के लिए बदल गई।

अपने परिवार के इतिहास को साझा करते हुए मीमी ओटी लिटिल दो युवाओं की कहानी साझा करती हैं, जो विश्व की विपरीत छोरों से थे। पर उन्होंने अपने अन्तरों को पाट कर एक लम्बी और टिकाऊ दोस्ती कायम की, और अपनी दुनियाओं को एक-दूसरे के क़रीब ला सके।

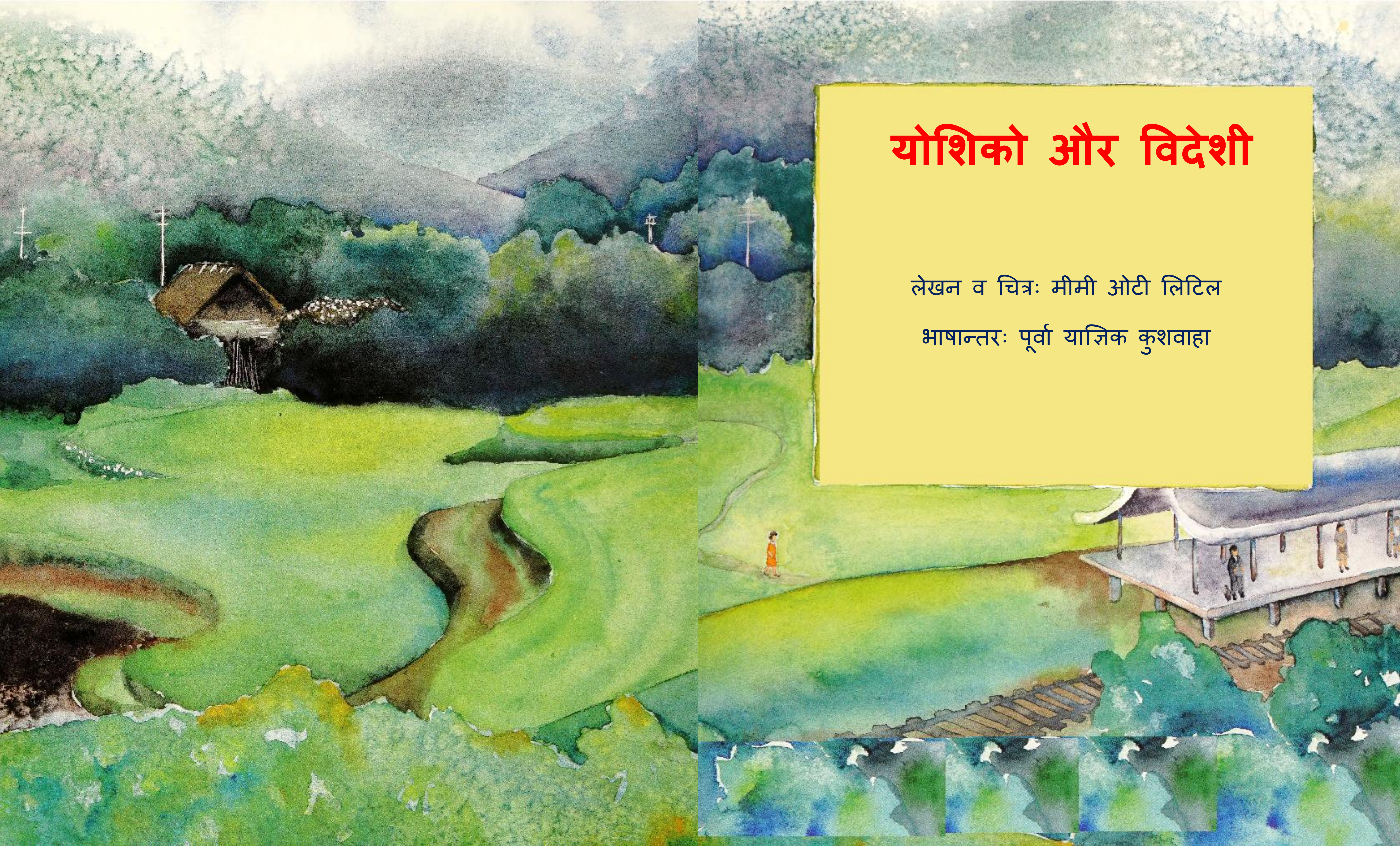

योशिको और विदेशी

लेखन व चित्रः मीमी ओटी लिटिल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक अच्छी जापानी लड़की को, जिसने एक विदेशी से बात की

"सभी यात्री ध्यान दें। हमें यह सूचना देते खेद है कि यही इस ट्रेन का अंतिम स्टॉप होगा। टोक्यो तक की यात्रा जारी रखने के लिए आप प्लैटफार्म के दूसरी ओर खड़ी ट्रेन में बैठें। असुविधा के लिए हम माफ़ी चाहते हैं।"

योशिका ने आह भरी। बेहद गर्मी थी। ट्रेन ठंसी हुई थी और अब उसमें कोई ख़राबी हो गई थी।

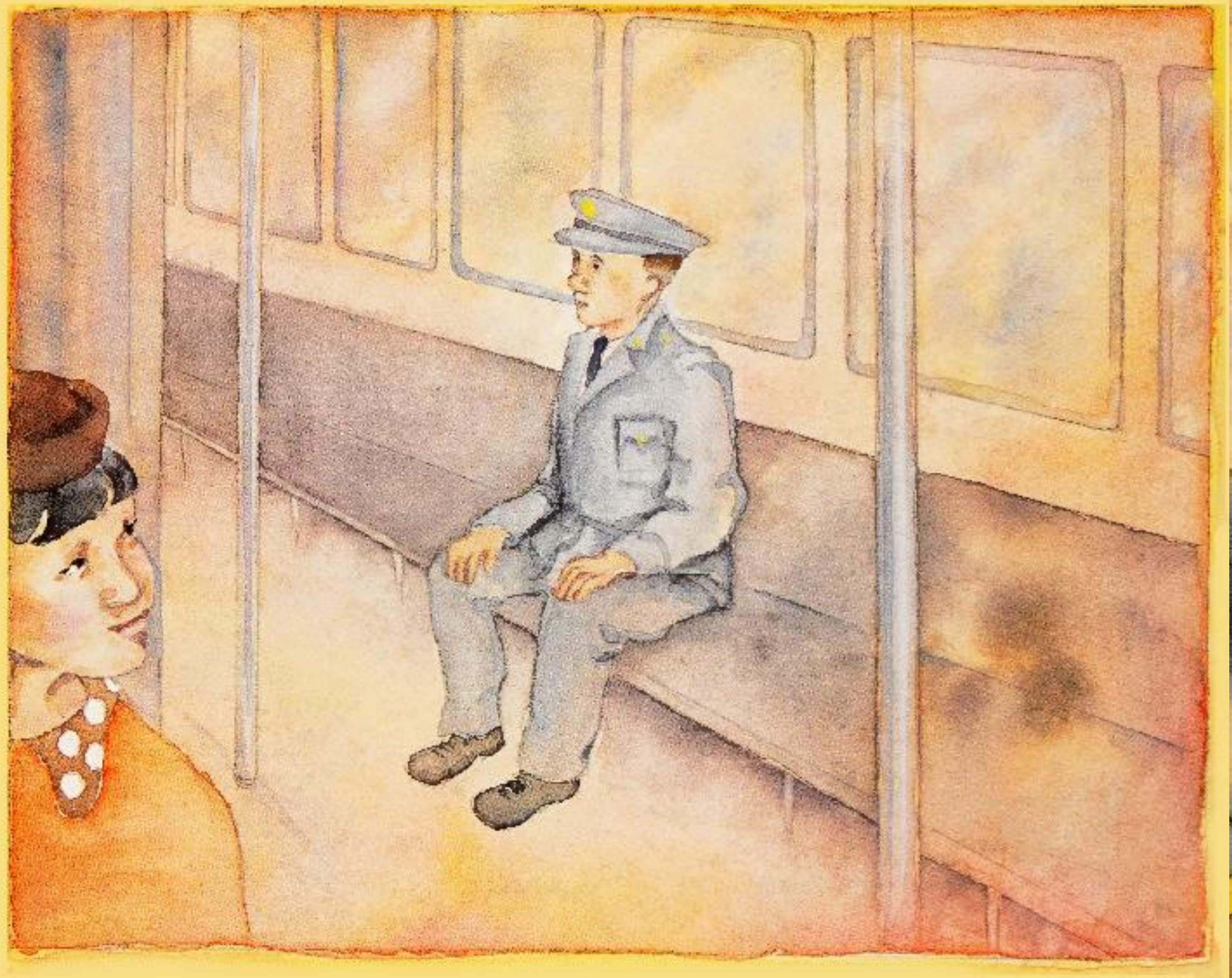

ट्रेन के डब्बे में अब केवल एक ही यात्री बैठा था। एक गाइजिन, योशिका ने सोचाा। एक विदेशी। उसे घोषणा समझ ही नहीं आई है। अफ़सोस, मैं उसकी मदद तो करना तो चाहूँगी, पर अच्छी जापानी लड़कियाँ विदेशियों से बात नहीं करतीं। खास तौर से वर्दीधारी अमरीकियों से। योशिको ने उसाँस छोड़ी।

ट्रेन का कंडक्टर इशारे करता और जापानी में बोलता आया। अमरीकी वायु सेना का वह अफ़सर झेंपता हुआ मुस्कुराया। "शुक्रिया कंडक्टर सर!" वह उठा, उसने प्लैटफॉर्म पार किया। योशिको ने उसे खिड़की से देखा। कितनी प्यारी मुस्कान है उसकी। वह गाइजिन जैसा बरताव भी नहीं कर रहा। दिख तो भला आदमी रहा है।

पर जब उस नौजवान अफ़सर की आँखें बाकी सवारियों के ऊपर से उसकी आँखों से टकराईं, उसके गाल लाल हो गए। मैं इतनी लम्बी क्यों हूँ? उसने सोचा। अमरीकी ने अपनी जेब से बोलचाल के आम वाक्यांशों की क़ितबिया निकाली और अपना गला साफ़ किया।

"माफ़ करें, पर रास्ता गायब हो चुका है," उसने ज़ोर से जापानी में कहा।

यात्री उसका कहा सुन धीमी आवाज़ में ठिठियाए। मैं उस पर कोई ध्यान नहीं दूंगी; योशिको ने खुद से कहा। हो सकता है वह किसी दूसरे से पूछ ले।

पर नौजवान अफ़सर ने फिर कोशिश की, "मैं नाचने वाली लड़की हूँ। डॉक्टर कहाँ है?" अब तो पूरा डब्बा ही हंस पड़ा।

वह मुझसे क्यों पूछ रहा है, योशिको ने सोचा। क्या उसे मालूम नहीं कि अच्छी जापानी लड़कियों से बात नहीं की जाती।

पर उसे मालूम नहीं था, उसने फिर कोशिश की, “देखिए मैं उबली मिर्च हूँ।”

डब्बा अब खिलखिला कर हंसने लगा। योशिको मुस्कुराई। गर्मी है, उसने सोचा। वह खो चुका है। लोग क्या सोचेंगे इसकी मुझे परवाह नहीं। “सर,” उसने साफ़ अंग्रेजी में कहा, “क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ?”

वह अमरीकी दरअसल सम्राट का महल देखना चाहता था। सो योशिको ने उसे समझाया कि वह वहाँ कैसे पहुँच सकता है।

“क्या आप मेरे साथ चलना चाहेंगी?” उसने पूछा।

योशिको ने सावधानी से जवाब दिया, “मुझे अपनी बहन से पूछना होगा। अगर वह हाँ कहती है तो मैं महल के फाटक के सामने मिलूंगी।”

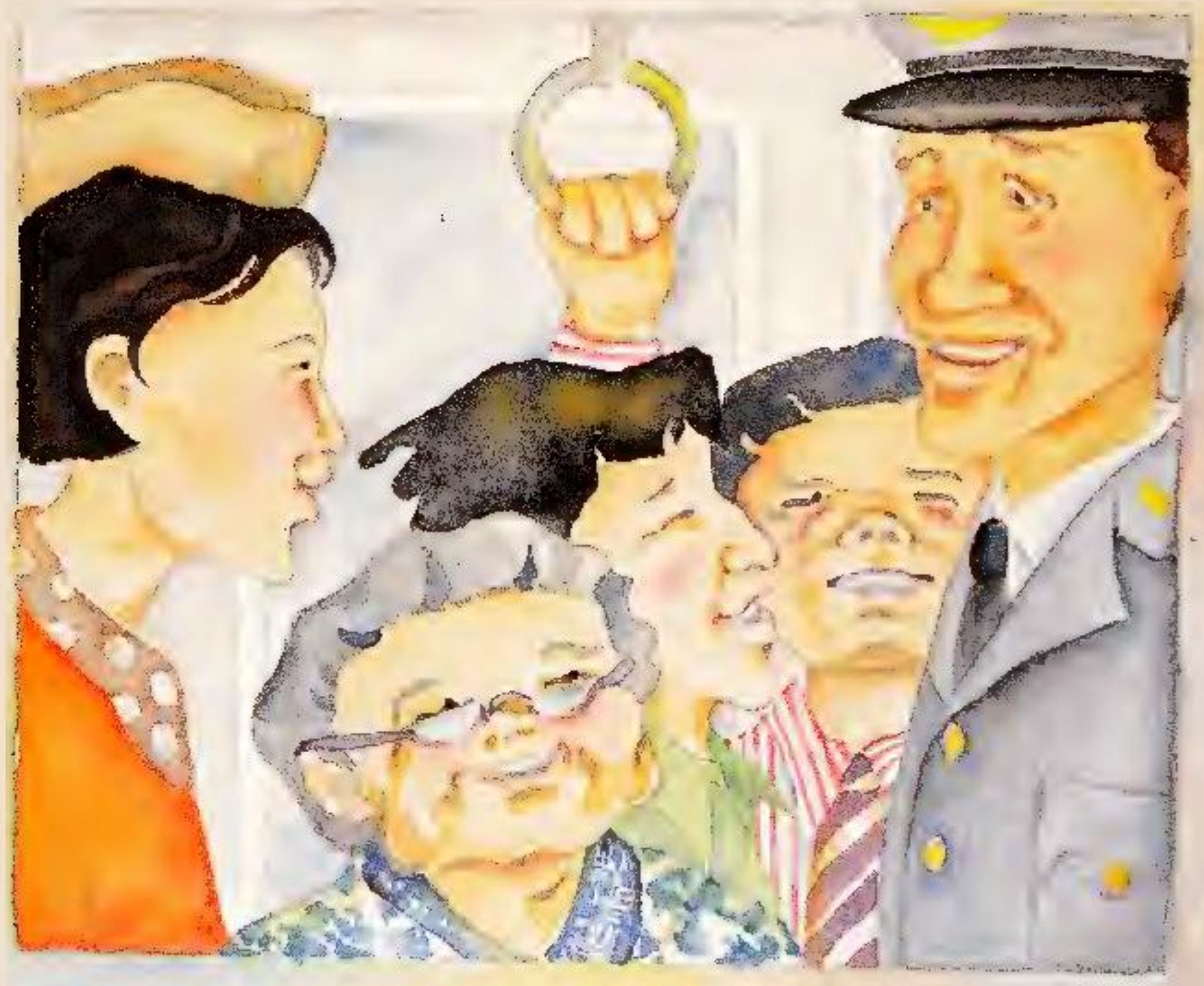

योशिको की सबसे बड़ी बहन काज़ुको टोक्यो में रहती थी। ''वह आख़िर है कौन?'' उसने जानना चाहा।

''एक आदमी जो ट्रेन में खो गया था।''

''और तुमने उसकी मदद की?'' काज़ुको ने पूछाा।

''हाँ, वह गाँव से आ रहा था,'' उसने जोड़ा। पर यह ज़िक्र नहीं किया कि वह विदेशी है।"

''ख़ैर, शाम के खाने के पहले लौट आना,'' उसकी बहन ने कहा।

जब योशिको लौटी, उसने अमरीकी का कोई ज़िक्र नहीं किया। ना ही तब कुछ कहा, जब वह सप्ताह भर बाद उससे मिली। तब फिर से। और फिर से।

ना उसने अपनी दूसरी बहनों या भाइयों को कुछ बताया। न अपनी माँ को। न चाचियों या चाचाओं को। न अपने चचेरे भाई-बहनों को। न अपने छोटे भतीजे और खास तौर से अपने पिता को तो कतई नहीं।

वह नौजवान अमरीकी अफ़सर, जिसका नाम फ्लैम था, जल्द ही योशिको से पूछने लगा, ''क्या तुमने अपने परिवार से मेरा ज़िक्र किया है?''

वह जवाब में हमेशा कहती, ''अभी इसका समय नहीं आया है।''

सो, फ्लैम उससे उसके परिवार के बारे में सवाल पूछ कर संतोष कर लेता। ''तुम्हारा घर कैसा है?''

''खासा बड़ा है,'' योशिको ने बताया। ''उसमें एक बाग है। बाग में मछलियों का एक ताल है। मेरे पिता उसमें सुन्दर मछलियाँ पाला करते थे। पर अब वे बूढ़े हो चुके हैं और मछलियाँ भी कब की मर चुकी हैं।''

जब वे अगली बार शहर में मिले, फ्लैम एक काँच का कटोरा थामे था। उसमें दो सुन्दर मछलियाँ थीं।

"इन्हें मैंने खुद पाला है," वह बोला। "मैं चाहता हूँ कि ये तुम्हारे पिता को मिलें।"

गर्मियाँ खत्म होने को थीं। "गाँव में अपने घर और परिवार के बारे में मुझे और बताओ," फ्लैम ने फिर से आग्रह किया।

"हमारे मुख्य कमरे में पूर्वजों की एक छोटी वेदी है। हम वहाँ कटोरों में शराब और चावल चढ़ाते हैं। हम ताज़ा उबला चावल और चावल से बनी उम्दा शराब चढ़ाते हैं। यों हम उनके प्रति अपना आदर-सम्मान जताते हैं।"

अगले सप्ताह फ्लैम ने योशिको को दो पैकेट थमाए।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

"सबसे बढ़िया चावल और उम्दा शराब," उसने जवाब में कहा। "यह तुम्हारे परिवार के लिए है। मैं भी पूर्वजों के प्रति अपना सम्मान जताना चाहता हूँ।"

तब एक दिन फ्लैम को संयुक्त राज्य लौटने का हुक्म मिला। उसने योशिको को ख़त लिखने का वादा किया और जापान छोड़ चला गया।

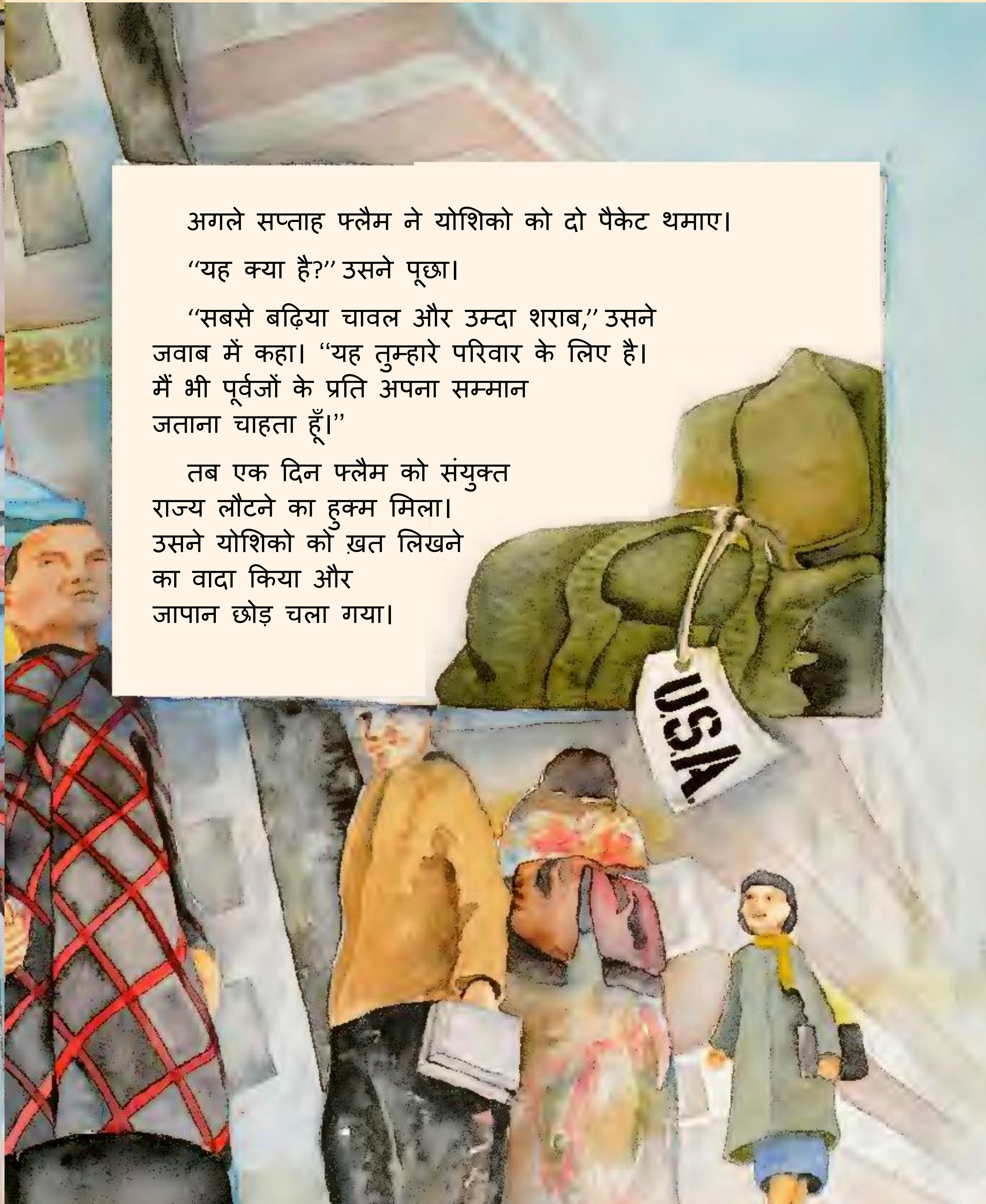

सप्ताह बीता।

तब दो सप्ताह।

योशिको को फ्लैम का कोई ख़त नहीं मिला।

एक महीने बाद एक ख़त आया। उसने उसे तब तक नहीं खोला जब तक वह टोक्यो के लिए ट्रेन पर सवार न हो गई। पहले ख़त के बीच एक दूसरा ख़त भी था जो उसके पिता के नाम था। योशिको का स्टेशन आया। पर वह बैठी रही, घंटों तक। वह सोच रही थी। पहला ख़त तो सरल था। उसमें लिखा था, "क्या तुम अमरीका आओगी? क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?"

उस शाम योशिको अपने माता-पिता, दो बहनों, तीन भाइयों, दो चाचियों, दो चाचाओं, सात चचेरे भाई-बहनों, दो भतीजियों, और एक भतीजे के साथ रात का खाना खा रही थी। "मैं एक ख़ास व्यक्ति से मिली हूँ," उसने शान्त भाव से कहा। सबने खाना बन्द कर दिया। योशिको ने अपने किमोनो की तहों में से एक तस्वीर निकाली, "यह उसकी तस्वीर है।"

परिवार वालों ने चौंक कर साँस खींची। तब सब एक साथ बोलने लगे। "यह सब क्या है? यह तो एक गाइजिन है! वह एक सैनिक है! एक अमरीकी सैनिक! तुम एक अमरीकी सैनिक से मिलती रही हो? पापा कुछ तो बोलिए!"

पर योशिको के पिता ख़ामोश रहे। उनका चेहरा गंभीर था। "खाओ!" कुछ पलों बाद उन्होंने कहा। "खाना ठंडा हो जाएगा।"

जब श्री सासागावा खा चुके, वे उठे और बड़े कमरे के कोने में बने पूर्वजों की वेदी के सामने जा खड़े हुए। "योशिको-चान!" योशिको फौरन मेज़ पर से उठी और अपने पिता के पास आ खड़ी हुई। योशिको के परिवार के बाकी लोग भी पीछे चले आए।

लाख से पुते एक डब्बे से ताज़ा चावल और आलूबुखारे की उम्दा शराब ले श्री सासागावा ने पवित्र कटोरों को भरा। "यह अमरीकी हमारे तौर-तरीकों को नहीं समझेगा। अमरीकी हमारे रीति-रिवाज़ों पर हंसते हैं।"

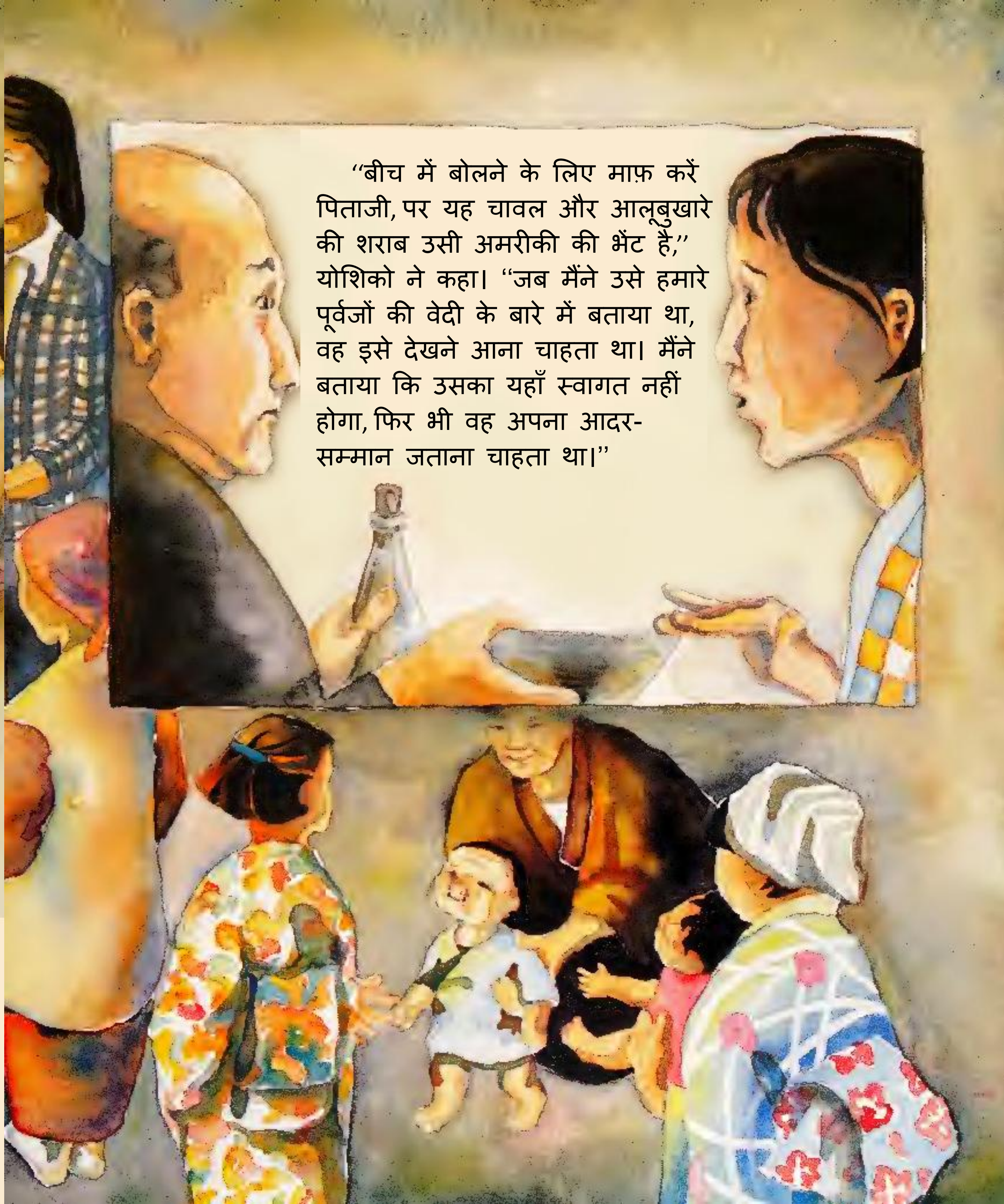

"बीच में बोलने के लिए माफ़ करें पिताजी, पर यह चावल और आलूबुखारे की शराब उसी अमरीकी की भेंट है," योशिको ने कहा। "जब मैंने उसे हमारे पूर्वजों की वेदी के बारे में बताया था, वह इसे देखने आना चाहता था। मैंने बताया कि उसका यहाँ स्वागत नहीं होगा, फिर भी वह अपना आदर-सम्मान जताना चाहता था।"

श्री सासागावा मुड़े और बाहर बाग में गए।

"योशिको-चान!" उन्होंने आवाज़ दी। योशिको बाग में गई। परिवार भी उसके पीछे-पीछे चला आया।

"अमरीकी तेज़-तर्रार होते हैं," उन्होंने कहा। "वे पेचीदा लोग होते हैं। वे सिर्फ़ अपनी तरक्की की बात सोचते हैं।"

"जी पिताजी, पर ये मछलियाँ उस अमरीकी ने ही दी थीं। उसने इन्हें पाला-पोसा था। वह चाहता था कि वह इन्हें आपको दे।"

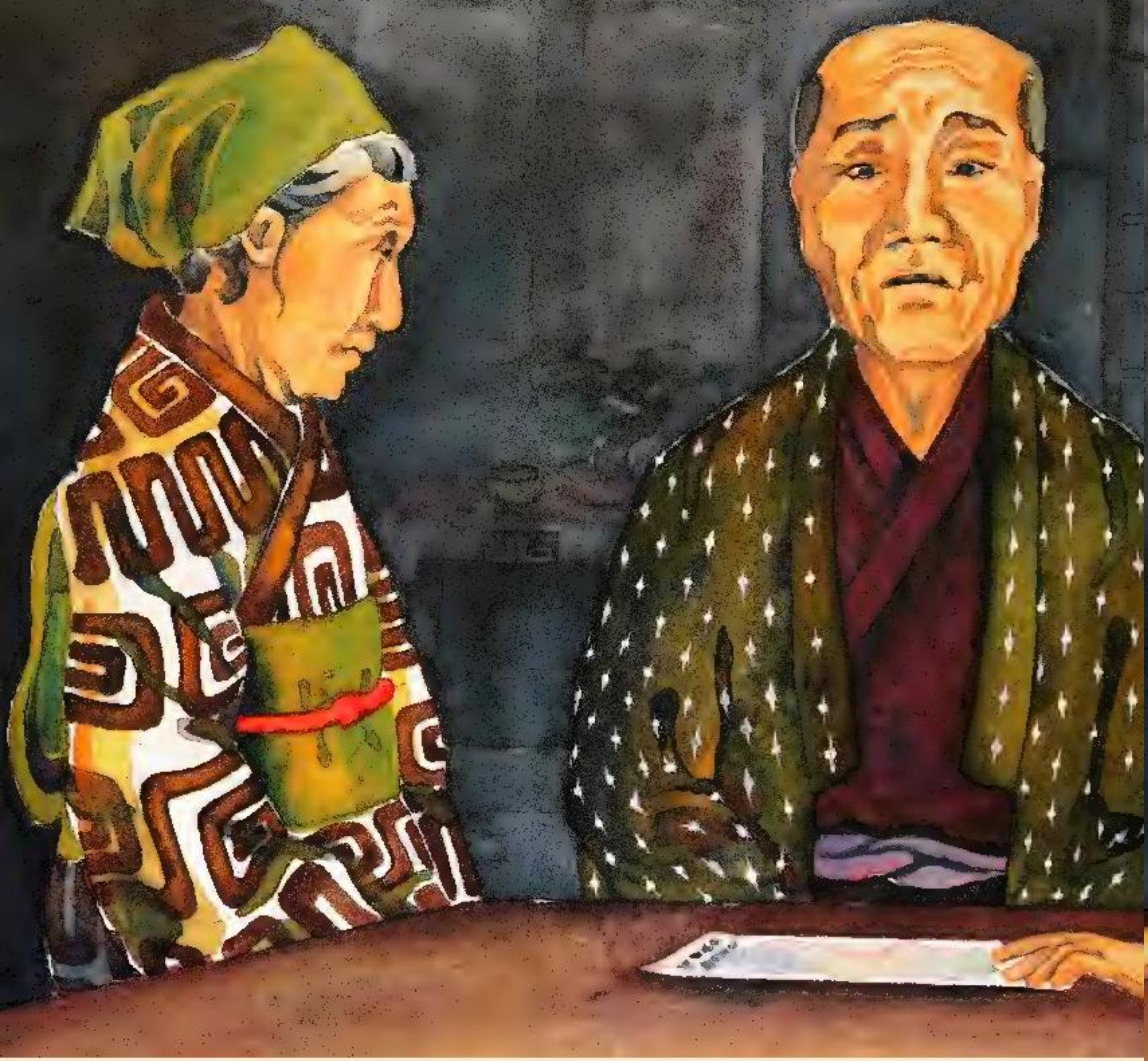

श्री सासागावा खाने की मेज़ पर लौटे। योशिको ने इन्तज़ार किया। परिवार ने भी इन्तज़ार किया।

“योशिको-चान!” योशिको पास आई। ज़ाहिर था परिवार भी आया।

“अमरीका घमंडी लोगों से भरा है। यह अमरीकी समझ ही नहीं सकता कि हमारे परिवार का हमारे लोगों का आदर करने का मतलब क्या होता है।”

“पिताजी, फिर से माफ़ी चाहूँगी। पर यह अमरीकी समझता है। उसने हमारे परिवार का आदर किया है। उसने हमारी भाषा बोलनी सीखी है।”

योशिको ने अपने किमोनो की तहों के बीच से ख़त निकाला। उस लिफ़ाफ़े पर खूबसूरत जापानी लिपि में “आदरणीय सासागावा-सान” लिखा था। योशिको ने ख़त मेज़ पर पिता के सामने रखा।

एक-एक कर परिवार के सारे सदस्य कमरे से बाहर निकल गए। योशिको भी चली गई। उसकी माँ और पिता ख़त को घूरते बैठे रहे।

दिनों-दिन तक किसीने अमरीकी का ज़िक्र नहीं किया।

तब एक दिन योशिको और उसकी माँ, घर के पिछवाड़े, पहाड़ी के पास बाँस काट रहे थे। आख़िरकार उसकी माँ ने कहा, "तुम्हारे पिता ने तुम्हारे अमरीकी को ख़त लिखा है, योशिको।"

"मेरे अमरीकी को?"

"तुम जब छोटी-सी थीं, तब से ही तुम दूसरे देश देखना चाहती थीं। दूर, बहुत दूर जाना चाहती थीं। अब तुम यह कर सकोगी।"

"आपने मुझे अपना आशीर्वाद दे दिया है!" योशिको ने खुशी की साँस भरते कहा।

उसकी माँ मुस्कुराईं। "शायद किसी दिन तुम लौटो, उस बार तुम अपने अमरीकी को साथ लाना।"

फ्लैम ओटी व योशिको सासागावा का विवाह 15 मार्च 1960 को सम्पन्न हुआ।

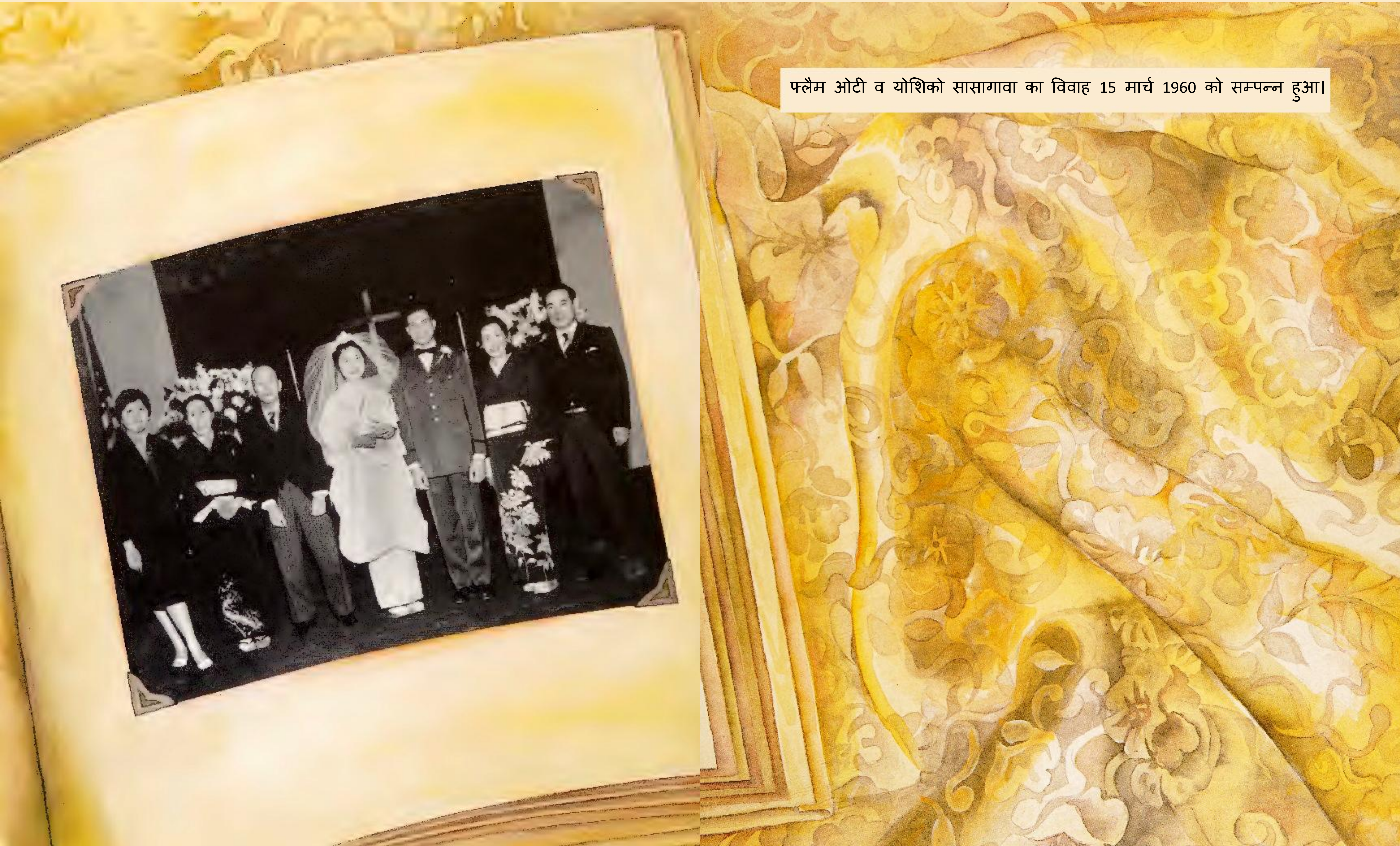

मीमी ओटी लिटिल
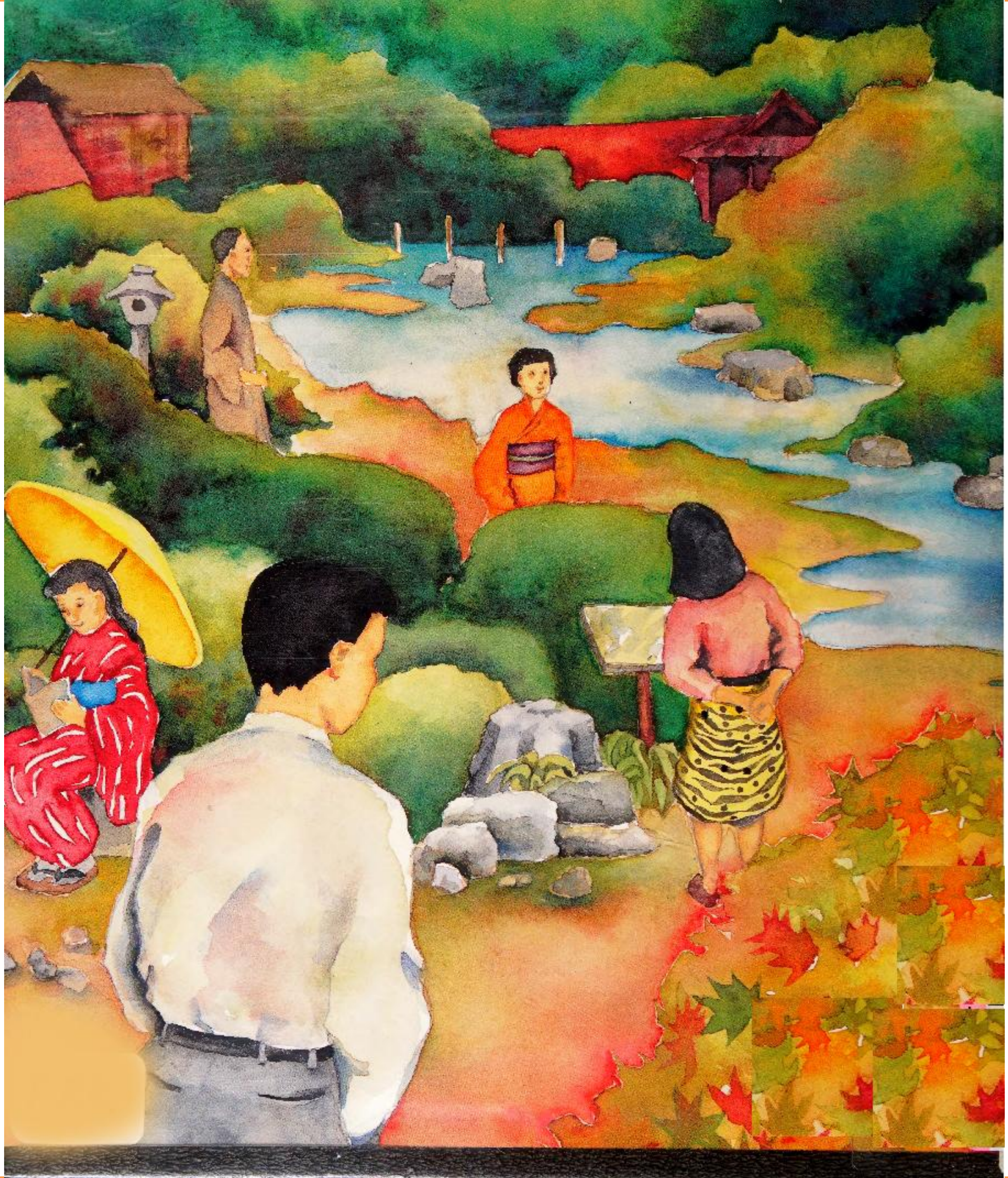
ब्लू मून सूप स्पून तथा *डैडी हैज़ अ पेयर ऑफ स्ट्रइप्ड शॉर्टस्* की भी लेखिका व चित्रकार हैं। वे अपने पति के साथ न्यू यॉर्क सिटी में रहती हैं